किसान का नाम– वैद्यनाथ भगत
पिता का नाम– स्व. रधुनाथ भगत
पता– बापू धाम चन्द्रहिया,
प्रखंड– मोतिहारी सदर, जिला पूर्वा चंपारण, बिहार
मोबाइल नं.– 9939073761

समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल :– 1.5 हेक्टेयर
समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयव :– गेहूँ + मसूर + आलू + गन्ना + मक्का + मूंग+ बागवानी फसले।
शुद्ध वार्षिक आय:– 4.0–4.5 लाख रू. प्रति वर्ष
कुल लागत मूल्य:– 4.0–4.5 लाख रू. प्रति वर्ष

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार–

''कहाँ जाता है जिनके पास जज्बा होता है। वह पहाड़ के सीने को चीरकर रास्ता बना लेते है'' ऐसा ही कुछ कर दिखाया है। श्री वैद्यनाथ भगत जी ने जो उम्र के सातवें दशक पूरा करने के वाद भी ऐसा जोश रखते है। जो किसी युवा पर देखने को मिलता है। आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर के तकनीकी अधिकारी एवं वैज्ञानिकों से सतत् सम्पर्क रखने वाले एक ऐसे किसान है। जो पूर्वी चम्पारण जिले में कृषि के समेकित प्रबंधन के मॉडल को अपने प्रक्षेत्र में बनाये हुए है।

वैद्यनाथ भगत जी कहते है, कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण तथा खेती में अधिक लागत एवं उत्पादन कम होने से घर व परिवार का भरण–पोषण एवं आजीविका उन्नयन के लिए लगातार समस्या बढ़ती जा रही थी, क्योंकि उनके पास पर्याप्त जमीन भी नही थी। जिससे वह प्रकृति की मार से भी कुछ फसलों को बचाकर आजीविका समवर्धन हेतु कुछ कर सके। वैद्यनाथ भगत जी कहते है, कि उनके पास में कुल मिलाकर 1.5 हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन है जिसमें वह गेहूँ, मसूर, आलू, गन्ना, धान और बागवानी फसले लेते है। इनके अपने ही जमीन में स्वयं का बोरवेल है जिससे वह अपने ही खेत पर लगी हुई उपर्युक्त फसलों पर परंम्परागत तरीकों से सिंचाई करते है।

फिर भी फसल उत्पादन और लागत में कोई खास अंतर समझ में नहीं आता था यही कारण है, कि मेरे घर वा परिवार की जीविका व आर्थिक अर्थव्यवस्था में दिन–प्रतिदिन समस्या बढ़ती जा रही थी एक दिन उनके सामने परिवार की जीविका चलाने के लिए मजबूरी आ गई इसी सोच में डूबे वैद्यनाथ भगत जी अपने गाँव के ही एक कृषक शंकर भगत जी के यहाँ बैठे थे, तो वहाँ आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना द्वारा चलाये जा रहे परियोजना राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन द्वारा प्रायोजित आजीविका उन्नयन के लिए जलवायु के अनुकूल कृषि मॉडल का विकास के बारे में जानकारी प्राप्त हुई की हमारा गाँव उपर्युक्त परियोजना हेतु चयनित हुआ है। उस दिन मैं अपने दिमाग में यही सोच कर बैठा था, कि जब आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान के अधिकारी हमारे गाँव आएंगें तो इस परियोजना के बारे में पूर्ण जानकारी मिलेंगी।

सन् 2017 जनवरी माह में पूर्वी अनुसंधान संस्थान के कुछ वैज्ञानिक का हमारे ग्राम में आगमन हुआ तो मैं जाकर उनसे मिला, मिलने के उपरांत परियोजना की सम्पूर्ण उपर्युक्त जानकारी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा मुझे दी गई और कहाँ गया, कि यदि आप परियोजना अंतर्गत जुड़ेगें तो आप इतनी ही जमीन पर बहुत

अच्छा उत्पादन करेंगें और आजीविका चलाने हेतु आपको मजदूरी व पलायन नहीं करना पड़ेगा।

वैद्यनाथ भगत कहते है, कि मैं परियोजना में जुड़ने के उपरांत पहले की अपेक्षा आज की स्थिति बेहतर है जिससे न मजदूरी न पलायन करना पड़ रहा है और साथ–साथ अपने घर की जीविका चलाने, आर्थिक अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाने में अथवा विभिन्न प्रकार के उपकरण जैसे– ट्रेक्टर, टयूवेल व अन्य कृषि योग्य उपकरण उत्पादन से प्राप्त हुए शुद्ध लाभ से खरीद कर खेती को और बेहतर तरीके से करने का प्रयास कर रहे है।

वैद्यनाथ भगत जी कहते है, कि परियोजना से जुड़ने के उपरांत मुझे दिल्ली ''भारतीय अंनुसंधान संस्थान'' प्रशिक्षण में जाने का मौका मिला परन्तु मेरी अवस्था ज्यादा होने की वजह से में अपने पुत्र मनोज कुमार भगत को उक्त प्रशिक्षण में भेजा जहाँ से प्राप्त प्रशिक्षण से खेती करने का तरीका सीखा। प्रशिक्षण के उपरांत जब मेरा पुत्र घर वापस आया तो उक्त ढंग से मेरे साथ खेती करने में सहयोग करने लगा।

वैद्यनाथ भगत जी कहते है, कि आज की स्थिति में परियोजना द्वारा प्राप्त सहयोग व समय–समय पर परियोजना अंतर्गत वैज्ञानिकों द्वारा दी गई जानकारी तथा परियोजना के द्वारा अपलब्ध कराये गये उन्नत किस्म के बीज का ही नतीजा है, कि आज में उतनी ही जमीन (1.5 हेक्टेयर) पर खेती करके सुचारू रूप से अपना और अपने परिवार की जीविका चलाने में सक्षम हुआ हूँ। आज के समय में मेरे पास खेती से हुए शुद्ध लाभ में मोटर साईकिल, शिक्षा हेतु अच्छे स्कूल व कॉलेज में अपने बच्चों को दाखिला दिलवाने में सक्षम हूँ।

परियोजना से पहले

कुल जमीन –	1.6 हेक्टेयर
कुल लागत –	बीज – 43,874/–
कुल तैयारी लागत–	1,92,562/–
कुल सिंचाई लागत–	46,875/–
कुल उर्वरक लागत–	43,199/–
पौधा संरक्षण लागत–	5,812/–
कुल लागत –	3.20 से 3.40 लाख रूपये
कुल लाभ –	6.0–6.5 लाख रूपये
कुल शुद्ध लाभ –	2.50–2.80 लाख (प्रति वर्ष)

परियोजना अंतर्गत

कुल जमीन –	1.6 हेक्टेयर
कुल लागत–	बीज–43,874/–
कुल तैयारी लागत–	2,26,500/–
कुल सिंचाई लागत–	49,125/–
कुल उर्वरक लागत–	52,668/–
पौधा संरक्षण लागत–	10,687/–
कुल लागत–	4 से 4.5 लाख रूपये
कुल लाभ –	8 से 8.5 लाख रूपये
कुल शुद्ध लाभ –	4 से 4.50 लाख (प्रति वर्ष)

Krishak Aradhna 08 feb to 14 feb 21.qxd 2/7/2021 8:10 PM Page 2

जज्बे ने रविन्द्र सिंह को बनाया सफल किसान

किसान का नाम	रविन्द्र सिंह
पिता का नाम	स्व. भरत सिंह
पता	जसौली पट्टी
मोबाइल नं	7543992111
समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल	3.41 हेक्टेयर
समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयव	गेहूं +धान+गन्ना+ऋतु+मौसमी सब्जियां मुर्गीपालन + पशुपालन + फलोत्पादन एवं वानिकी पौधे
शुद्ध वार्षिक आय	7.00-7.50/- लाख प्रति वर्ष
लागत मूल्य	6 से 6.5 लाख प्रति वर्ष

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार

एक सूक्ति है कि 'जिनके पास जज्बा होता है वो पहाड़ के सीने को फाड़कर रास्ता बना लेते है' ऐसा ही कुछ कर दिखाया है, जसौली पट्टी के रविन्द्र सिंह ने जो किसी युवा में देखने को मिलता है। आई.सी.ए.आर. पटना एवं महात्मा गांधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान, पिपरा कोठी तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपरा कोठी से सतत् सम्पर्क एवं तकनीकी सहायता से इस नवप्रवर्तक किसान जो अपने कृषि प्रक्षेत्र को समेकित कृषि मॉडल में तब्दील कर दिया हैं। उनके जज्बे की कद्र करते हुए तत्कालिन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार द्वारा राधामोहन सिंह द्वारा 2017 और 2018 में सम्मानित किया तथा मंत्री द्वारा रविन्द्र सिंह को चंपारण जिले के मित्र कृषक की संज्ञा दी है।

सक्सेस स्टोरी

खेती का समेकित मॉडल

फसल उत्पादन में रविन्द्र सिंह जी ने रवि के मौसम में गेहूँ, आलू, गन्ना, मसूर इत्यादि की उन्नत किस्मों एवं अनुशंसित वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर से अच्छा उत्पादन प्राप्त कर रहे है। गेहूँ की उन्नत किस्म HD-2967 एवं HD-2733 से 38.40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, गन्ना की किस्म CO-0238, CO-0118 से 1100-1200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और आलू की उन्नत किस्म कुफरी पुखराज, कुफरी ख्याति, कफरी सिंदूरी से 250.300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, उत्पादन कर रहे है। इसी प्रकार खरीफ ऋतु में धान की उन्नत किस्म जैसे-स्वर्ण श्रेया, CR-909 के उन्नत बीज का उपयोग कर 48.52 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, उत्पादकता प्राप्त कर रहे हैं। एवं दलहनी फसलों में मूंग और मसूर की खेती कर क्रमशः 14.18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के लगभग पैदावार प्राप्त करते है। रविन्द्र सिंह की 3 बीघा यानि 1.41 हेक्टेयर में फलदार पौधों का बगीचा लगाये हुए है जिसमें आम, लीची के क्रमशः 120, 180 पौधे है। आम में प्रति वर्ष प्रति पौधा 1000/- रुपए एवं लीची से 800/- रुपए प्रति पौधे से आमदनी प्राप्त करते हैं, इस प्रकार रविन्द्र सिंह क्रमशः आम और लीची में 1,20,000-1,40,000/- की प्रति वर्ष उत्पादन प्राप्त करते है। रविन्द्र सिंह जी के अनुसार फलोत्पादन के बगीचे के प्रबंधन एवं पौध-संरक्षण में प्रति वर्ष 30 से 40 हजार रूपये का खर्च आता है इस प्रकार वे 2,00,000 की शुद्ध लाभ प्रति वर्ष प्राप्त करते हैं।

रविन्द्र सिंह स्वयं अपने घर में 2 गाय साहीवाल और 2 मुरा नस्ल की भैंसे पाल रखे हैं जिनसे प्रति वर्ष 6,750 से 7,000 ली. दूध का औसतन उत्पादन प्रति वर्ष करते हैं जिससे वह कुल लागत निकालने के बाद भी 90,000-95,000 प्रति वर्ष की शुद्ध आय प्राप्त करते है। इसके अलावा रविन्द्र सिंह सन् 2017 में आई.सी.ए.आर. पटना द्वारा चलाये जा रहे परियोजना में जुड़ने के उपरांत परियोजना मुर्गी पालन की शुरूआत 300 देशी मुर्गी के चूजे से की एवं आज भी और इस व्यवसाय में संलग्न है उनके पास अभी भी कुल मिलाकर 1000-1200 चूजे उपलब्ध हैं तथा प्रति वर्ष शुद्ध लागत निकालने के बाद 1 से 1.50 लाख रुपए प्रति वर्ष की आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या घटती हुई जोत दिमाग में रखते हुए रविन्द्र सिंह प्राकृतिक संसाधन को उचित उपयोग करते हुए वानिकी की विभिन्न प्रणालियों से वृक्षारोपण के तहत व्यवसायिक स्तर से बांस, यूकेलिप्टस लगाए हुए हैं जो फसल उत्पादन के अतिरिक्त पड़ी भूमि के उपयोग के साथ-साथ मुनाफा वा वार्षिक आय में वृद्धि करती है इस प्रकार से रविन्द्र सिंह ने बांस उत्पादन से औसतन 30,000 रूपये की शुद्ध आमदनी प्रति वर्ष प्राप्त करते है। जैविक कृषि की ओर रूझान रखने वाले रविन्द्र सिंह जी अपने प्रक्षेत्र पर दो कम्पोस्ट इकाई बनाकर जैविक खाद भी उत्पादन करते हैं और अपने स्वयं के उपयोग हेतु मौसमी सब्जियों एवं खाद्यान्न फसलों में इसका उपयोग करते है। इस प्रकार से रविन्द्र सिंह प्रति वर्ष रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में कम कर 10,000 से 15,000 रुपए तक की बचत कर लेते है। उपरोक्त सभी विधाओं से रविन्द्र सिंह प्रति वर्ष 7,00000 लाख से 7.50000 लाख तक की आमदनी प्राप्त कर लेते है।

आई.सी.ए.आर.-आर.सी.ए.आर. पटना ने दिलाई पहचान

रविन्द्र सिंह 2017 में आई.सी.ए.आर. पटना से जुड़कर ये मुकाम हासिल किया है जो बिहार राज्य के किसानों के लिए एक उदाहरण है, इसके पहले भी वे खेती करते थे परन्तु आई.सी.ए.आर. पटना द्वारा चलाये जा रहे परियोजना से जुड़ने के बाद परियोजना अंतर्गत समय-समय पर मिले मार्गदर्शन एवं तकनीकी सहयोग से अपने स्वयं के कृषि प्रक्षेत्र में तो उन्नत तकनीकी से समेकित कृषि प्रबंधन तो कर रही है तथा अपने क्षेत्र के किसानों को भी इसके प्रति प्रेरित कर रहे हैं।

प्रस्तुति : भारतीय कृषि अनुसंधान परिसर का पूर्वी अनुसंधान परिषद् पटना, बिहार
आजीविका उन्नयन के लिए जलवायु के अनुकूल कृषि मॉडल का विकास परियोजना के अन्तर्गत

Krishak Aradhna 28 june-4 july 21 digital edtion.qxd 6/28/2021 5:54 AM Page 2

जज्बे ने रंजन सिंह को बनाया सफल किसान

किसान का नाम	रंजन सिंह
पिता का नाम	स्व. रामनारायण सिंह
पता	जसौली पट्टी, प्रखंड- कोटवा
	जनपद- पूर्वी चम्पारण
मोबाइल नम्बर	7549302360
समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल	2 हेक्टेयर
समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयव	गेहूँ, धान, मूँग, आलू मुर्गी पालन, मछली पालन, फल, एवं वानिकी पालने
शुद्ध वार्षिक आय	3,50000 लाख रु से 4,00000 रु (प्रति वर्ष)
लागत मूल्य	1,50000 लाख रु से 2,00000 रु (प्रति वर्ष)

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार

रंजन सिंह जसौली पट्टी के कृषको में एक है जिनकी शिक्षा दीक्षा बी.ए. तक होने के बावजूद नौकरी पेसा न करते हुए कृषि कार्य कर अच्छे से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। रंजन सिंह जी कहते हैं कि मैं पहले परम्परागत तरीके से खेती करता था जिसमें से केवल भरण-पोषण के लिए उत्पादन होता था और घर की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही थी। क्योंकि खेती से लागत और लाभ में कोई खास अन्तर समझ में नहीं आ रहा था तब मैंने खेती न करने का फैसला लिया। परंतु 2017 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना द्वारा चलाये जा रहे परियोजना आजीविका उन्नयन के लिए जलवायु के अनुकूल कृषि मॉडल का विकास से गाँव के ही किसान रविन्द्र सिंह द्वारा परियोजना के प्रभारी डॉ. मोहम्मद मोनोबुल्लह से सम्पर्क करवाकर उक्त परियोजना में जोड़ा। और परियोजना के अंतर्गत मुझे विभिन्न कृषिगत शोध-संस्थानों में प्रशिक्षण हेतु भेजा गया वहाँ से प्राप्त प्रशिक्षण के अनुरूप मैं अपने कृषि फार्म में पुनः खेती करने लगा तो मुझे पहले की अपेक्षा कुछ लाभ मिला तब से मैं लगातार आई.सी.ए.आर. के महात्मा गांधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान पिपरा कोठी एवं आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिको के सम्पर्क में रहने लगा जिसका नतीजा आज देखने को मिल रहा हैं। मैं अपने 2 हेक्टेयर कृषिगत भूमि को एक समेकित कृषि का मॉडल तैयार कर उतने में ही मछली पालन से 90,000 से 1,00000 एवं मुर्गी पालन से 150,000 से 175,000 तथा उद्यानिकी एवं वानिकीय पौधों से 50-60,000 तथा खाद्यान्न फसलों से 75-80,000 तक की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर लेता हूँ।

सक्सेस स्टोरी

रंजन सिंह कहते की उक्त परियोजना के द्वारा मुझे ऋतुओं के आधार पर उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराये जाते है जिसे मैं अपने कृषिगत भूमि में लेता हूँ तथा परियोजना के पदाधिकारियों से समय-समय पर सलाह लेकर और अच्छी उपज प्राप्त करता हूँ। रंजन सिंह जी कहते है कि मैं समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर बहुत खुश हूँ तथा भविष्य में कुछ अवयव जैसे पशुपालन सब्जी उत्पादन इत्यादी जोड़ना चाहता हूँ जिससे मैं और अधिक लाभ ले सकू।

आई.सी.ए.आर. पूर्वी अनुसंधान परिसर द्वारा कृषि कार्य में मिली पहचान

रंजन सिंह कहते हैं कि आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना के पिछले स्थापना दिवस-22 फरवरी 2021 को चम्पारण जिले के अग्रणी कृषक अवार्ड से नवाजा गया। यह मेरे लिए एक गौरव की बात हैं।

प्रस्तुति: भारतीय कृषि अनुसंधान परिसर का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना (बिहार)

कृषक आराधना
कृषि जगत का प्रमुख साप्ताहिक अखबार

अखबार की सदस्यता ऑनलाइन लेने के लिए क्लिक करें www.krishakbharti.in

समेकित कृषि पद्धति से बदली सचिन कुमार की तकदीर

किसान का नाम	सचिन कुमार सिंह
पिता का नाम	शंकर सिंह
पता	ग्राम+पो.-चन्द्रहिया, प्रखंड-सदर मोतिहारी जिला-पुर्वी चम्पारण, बिहार
मोबाईल	9199856015
समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल	1 हेक्टेयर
समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयक	गेहूँ, धान, आलू, मूँग, मछली पालन, मौसमी सब्जियां फलोत्पादन एवं वानिकी पौधे।
शुद्ध वार्षिक आय	2,70000 से 3,00000 (प्रति वर्ष)
लागत मुल्य	1.80 लाख से 2,00000 (प्रति वर्ष)

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार

सक्सेस स्टोरी

सचिन कुमार सिंह ग्राम चन्द्रहिया के प्रगतिशील कृषकों में से एक है इनकी शिक्षा दीक्षा इंटरमीएिट तक होने के बावजूद इनका रूझान खेती की तरफ ज्यादा था परंतु सही व समुचित तकनीकी जानकारी न होने के कारण अच्छा उत्पादन नही ले पाते थे यही इनके परेशानी का सबब था सैर करते ही क्या....? जीवित रहने के लिए कुछ न कुछ विकल्प चाहिए था। सचिन कहते हैं कि सन् 2017 आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना द्वारा चलाए जा रहे परियोजना आजीविका उन्नयन के लिए जलवायु के अनुकूल कृषि मॉडल का विकास परियोजना के अंतर्गत के बारे में गांव के ही एक सज्जन से जानकारी मिली तो प्राप्त जानकारी के अनुसार परियोजना के प्रभारी एवं आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मो. मोनोबुल्लह से सम्पर्क कर परियोजना के बारे में पूछा तो उन्होंने उक्त परियोजना के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया तब मुझे ऐसा लगा कि गांव से बाहर जाकर ज्यादा से ज्यादा 15 हजार रुपए प्रति माह कमाया जा सकता है जो इस समय के अनुसार जीवन निर्वाहन एवं परिवार के पालन-पोषण हेतु पर्याप्त नहीं है।

सचिन कहते हैं कि सन् 2017 में आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना एवं **MGIFRI** पिपराकोठी के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के सुझाव के अनुसार वैज्ञानिक तरीके से खेती के साथ-साथ खाद्यान फसलें मछली पालन तथा सब्जीत्पादन, फलोत्पादन एवं वानिकी पौधों की शुरूआत किया। एक हेक्टेयर जमीन पर परियोजना से पहले 15-20 हजार रू. प्रतिवर्ष शुद्ध आय ले पाता था और आज उतनी ही जमीन में परियोजना के सभी तकनीकी अधिकारी तथा **MGIFRI** पिपराकोठी के सहयोग व सुझाव से एक समेकित कृषि मॉडल तैयार किया जिसमें प्रतिवर्ष खाटाल मछली पालन करके 1,20000 से 1,40000 हजार और सब्जीत्पादन से 50-60 हजार तथा खाद्यान्न फसलें से 60-70 हजार का शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर लेते है बढ़ती हुई जनसंख्या और घटती हुई जोत को ध्यान में रखते हुये जलवायु के अनूकुल उचित संसाधनो का उपयोग करते हुए वानिकी एवं फलोत्पादन की विभिन्न प्रणालियों से वृक्षारोपण कराये हुए हैं जो फसलोत्पादन मछलीपालन, तथा मुर्गीपालन के अतिरिक्त भूमि के उपयोग के साथ-साथ लाभ व वार्षिक आय में वृद्धि करते हैं इस प्रकार से सचिन सिंह जी उपर्युक्त सभी विधाओ से 2,70000-3,00000 लाख तक कि आमदनी प्राप्त कर लेते है।

आई.सी.ए.आर.- आर.सी.ए.आर. पटना ने दिलाई पहचान

सचिन सिंह जी आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना से जुड़कर यह मुकाम हासिल किया जो पूर्वी चम्पारण जिले में आज के समय में प्रगतिषील कृषकों में से एक है जिनके समेकित कृषि प्रणाली मॉडल देखने के लिए आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना एवं **ICAR** दिल्ली के कुछ पदाधिकारी आ चुके हैं और इसी वर्ष आई.सी.ए.आर. के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना के स्थापना दिवस समारोह में केन्द्रीय मत्स्य एवं दुग्धउत्पादन एवं पशुपालन मंत्री गिरीराज सिंह द्वारा उन्नत कृषक अंवार्ड से नवाजा गया। सचिन सिंह क्षेत्र के युवा पीढ़ी के लिए एक उदाहरण हैं कि यदि किसी भी काम को लगन से किया जाए तो सफलता एक न एक दिन सोर जरूर मचा देती है।

प्रस्तुति: भारतीय कृषि अनुसंधान परिसर का पूर्वी अनुसंधान परिषद् पटना, बिहार

किसान का नाम- शिवलाल सहनी
पिता का नाम- स्व. दशई सहनी
पता-खैरीमल - जमुनियाँ, प्रखंड- चकिया, जिला पूर्वी चंपारण, बिहार
मोबाइल नं.- 9931015084
समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल :- 1.0 हेक्टेयर

समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयव :- आलू + गेहूँ + गन्ना + धान + मक्का + पशुपालन एवं मत्स्य पालन।
शुद्ध वार्षिक आय:- 2.75 से 3 लाख रू. प्रति वर्ष, कुल लागत मूल्य:- 3 से 3.25 लाख रू. प्रति वर्ष

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार -

शिवलाल सहनी खैरीमल गाँव के एक प्रगतिशील किसान है। जिनकी शिक्षा–दीक्षा अच्छी न होने के बावजूद भी समेकित कृषि प्रणाली का समायोजन कर अच्छा लाभ ले रहे है।

शिवलाल सहनी जी कहते है, कि फसल उत्पादन के साथ–साथ पशुपालन + मछली पालन काफी लाभप्रद रहता है। मैं सन् 2017 में ICAR के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना से जुड़ा हुआ हूँ। इसके पहले मैं केवल जीवन यापन हेतु खेती करता था परन्तु ICAR के पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना से जुड़ने के बाद मुझे समेकित फसल प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण के लिए दिल्ली ले जाया गया जहाँ से प्राप्त प्रशिक्षण एवं ICAR के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों की सलाह से मैं समेकित कृषि प्रणाली अपनाया। जिससे मुझे मेरे आमदनी में वृद्धि हुई इसके पहले खेती में लागत की अपेक्षा मुझे लाभ कम होता था, तो खेती न करने का विचार मन में आता था, परन्तु

उसी बीच ICAR के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आया तो उनलागों के द्वारा दी गयी सलाह आज मेरे लिये लाभप्रद साबित हुई।

मैं फसल उत्पादन के साथ–साथ मछली पालन भी करता हूँ। जिससे प्रति वर्ष 35,000 से 40,000 रूपये की शुद्ध लाभ होता है तथा खेतों से प्राप्त अवषेशों से और पशुओं के गोबर से कम्पोस्ट खाद भी बनाकर सब्जी एवं खाद्यन्न फसलों में उपयोग में लाता हूँ जिससे फसल में वृद्धि होती है और खाद एवं उर्वरक की भी लागत में कमी आती है, इस प्रकार से मैं आज के समय में उतने ही जमीन में 2.75–3 लाख रूपये की आमदनी प्रति वर्ष प्राप्त कर लेता हूँ।

मैं फसलोत्पादन के साथ–साथ पशुपालन एवं मत्स्य पालन का समयोजन से काफी प्रसन्न हूँ तथा भविष्य में कुछ और अव्यवों का समायोजन करने का विचार कर रहा हूँ, ताकि आय में और इजाफा ले सकूं।

Krishak Aradhna 8-14 march 21.qxd 3/12/2021 8:42 AM Page 1

डाक पंजीयन क्रमांकः ग्वालियर/40181787/2019-21 RNI No.MPHIN/2014/54645

Support By
Ksaan Helpline
+91-7415538151
https://www.kisaanhelpline.com

कृषक आराधना
www.krishakbharti.in @ Online edition 16 page
कृषि जगत का प्रमुख साप्ताहिक अखबार
ISSN: 2582-7286
वर्ष 07 अंक 49 ग्वालियर, सोमवार 08 मार्च से 14 मार्च 2021 पृष्ठ 12 ■ मूल्य 10 रुपए

समेकित कृषि प्रणाली ने बदली सुरेन्द्र राय की तकदीर

किसान का नाम	**सुरेन्द्र राय**
पिता का नाम	**स्व. रामचन्द्र राय**
पता	**ग्राम.-पो.-चन्द्रहिया, प्रखण्ड-सदर मोतिहारी जिला पूर्वी चम्पारण बिहार**
मोबाईल	9939532514
समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत क्षेत्रफल	2.0 हे.
समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य अवयक	**गेहूँ, गन्ना, आलू, मूँग, मौसमी सब्जियां फलोत्पादन एवं वानिकी पौधे।**
शुद्ध वार्षिक आय	**3.40-3.60 (प्रति वर्ष)**
लागत मूल्य	**2.50-2.75 (प्रति वर्ष)**

समेकित कृषि प्रणाली के बारे में किसान के विचार

सुरेन्द्र राय चन्द्रहियाँ ग्राम के प्रगतिशील किसान है, जिनकी शिक्षा दीक्षा इन्टरमिडियट तक होने के बावजूद थी अपने कृषि प्रक्षेत्र को समेकित कृषि प्रणाली का समयोजन कर अच्छा लाभ ले रहे हैं। सुरेन्द्र राय कहते हैं कि फसल उत्पादन के साथ-साथ मौसमी साब्जियाँ एवं फल उत्पादन से भी अच्छा लाभ लिया जा सकता है। सुरेन्द्र राय सन् 2017 से आई.सी.ए.आर.-का पूर्वी अनु. परिसर पटना द्वारा चलाई जा रही परियोजना आजीविका उन्नयन के लिए जलवायु के अनुकूल कृषि मॉडल का विकास से जुड़े। इसके पहले वे परंपरागत तरीके से खेती कर जीवन यापन करते थे जिसमें उनके परिवार की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही थी क्योंकि आय का स्रोत खेती के अलावा कुछ नहीं था बस यही कारण से परेशानी बढ़ती जा रही थी। परन्तु सन् 2017 मे आई.सी.ए.आर.-का पूर्वी अनु. परिसर पटना के परियोजना से जुड़ने के बाद मुझे परियोजना की प्रशिक्षण हेतु दिल्ली भेजा गया जहां से प्राप्त प्रशिक्षण एवं आई.सी.ए.आर.-का पूर्वी अनु. परिसर पटना के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों की सलाह से सुरेन्द्र ने फसल उत्पादन के साथ-साथ फल एवं सब्जी उत्पादन एवं नगदी फसलों को एक समेकित कृषि प्रणाली के रूप में अपनाया जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हुई। इसके पहले भी सुरेन्द्र ने उतने ही प्रक्षेत्र में खेती 1 एक लाख से 120,000 प्रति वर्ष आय प्राप्त करता था। परन्तु आज वे अपने निजी कृषि प्रक्षेत्र में एक कम्पोस्ट यूनिट तैयार कर उससे जैविक गोबर की खाद तैयार कर उपयोग कर रहे हैं और खाद एवं उर्वरक में 8000-10000 बचत कर लेते हैं और फल उत्पादन से 20000-25000 प्रतिवर्ष लाभ प्राप्त कर रहे हैं और साथ में 1 हेक्टेयर भूमि में 200 पौधे सागवान के लगा रखे हैं जो मेरे लिए आने वाले समय मे लाभप्रद होंगे।

सक्सेस स्टोरी

इस प्रकार से सुरेन्द्र राय कहते है कि मैंने परियोजना से जुड़ने के बाद परियोजना में पदस्थ तकनीकी अधिकारियों एवं परियोजना प्रभारी के सलाह से इतनी ही भूमि में समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर 3 लाख 40 हजार से 3 लाख 60 हजार तक की शुद्ध आय प्रतिवर्ष प्राप्त करता हूँ जिसमें मैंने फसलोत्पादन के साथ-साथ सब्जी एवं फलोत्पादन तथा वानिकी पौधों के समायोजन से काफी प्रसन्न हूँ और भविष्य में और कुछ अवयवों को समायोजित करने का विचार कर रहा हूं ताकि मैं कुछ और लाभ ले सकूं।

सुरजीत पांडेय, राहुल कुमार लखेरे, डॉ ए.रायजादा
डॉ. संजीव कुमार, डॉ. रवि कुमार एवं डॉ. मोहम्मद मोनोबुल्लाह
प्रधान वैज्ञानिक एवं परियोजना प्रभारी आईसीएआर
का पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना-800001